22 आदर्श प्राचार्य

जयन्ती जोसेफ



सब स्कूलों के लिए एक 'आदर्श' प्रमुख को परिभाषित कर पाना मुश्किल है। वास्तव में तो आप कह सकते हैं कि ऐसा कुछ होता ही नहीं है, क्योंकि प्रत्येक स्कूल का परिवेश अनोखा होता है; उसमें काम करने वाले विभिन्न व्यक्तियों की अपनी समस्याएँ और क्षमताएँ होती हैं। जिसे हम एक स्कूल के लिए सर्वश्रेष्ठ प्राचार्य मानते हैं, हो सकता है कि वह किसी अन्य स्कूल के लिए बिलकुल अनुपयुक्त हो। ऐसा होना अनिवार्य है, क्योंकि अलग–अलग स्कूलों की आवश्यकताएँ अलग–अलग होती हैं, इसलिए उनके 'आदर्श' प्राचार्य भी अलग–अलग होते हैं। कोई स्कूल किस तरह चलता है, इसके पीछे कई कारक काम करते हैं, जिनमें से प्राचार्य भी एक कारक है। इस सन्दर्भ में कि एक स्कूल कैसा है, उसका आर्थिक दर्जा तथा अन्य क्षमताएँ और सीमाएँ (जैसे कि शिक्षकों की उपलब्धता) महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन संस्था का प्रमुख तो उसका अभिन्न हिस्सा होता ही है।

ऊपर कही गई बात के बावजूद मैं यह मानती हूँ कि कुछ सामान्य विशेषताएँ ऐसी हैं जो अधिकांश स्कूलों हेतु अधिकतर प्राचार्यों में होनी वांछनीय हैं। किसी संस्था के प्रमुख को स्वभावतः विद्यार्थियों की चिन्ता होनी चाहिए और उसे उनके लिए आसानी से उपलब्ध होना चाहिए। ऐसे प्राचार्य का होना निरर्थक है जिसके पास जाने में संकोच होता हो। क्योंकि प्राचार्य के आगे विद्यार्थी और शिक्षक, दोनों ही अपने सरोकार के मुद्दों को रखने में हिचकिचाएँगे। प्राचार्य को चाहिए कि जब भी जरूरत हो, वह विद्यार्थियों के साथ खुली चर्चा के लिए समय निकाले और उनकी राय पर गम्भीरतापूर्वक विचार करे। उसे लगातार सुधार करने में लगे रहना चाहिए और हर प्रकार के स्रोतों से सुझाव लेने के लिए तैयार रहना चाहिए, चाहे वे अनपेक्षित स्रोत ही क्यों न हों।

मेरी एक प्राचार्य बहुत प्रेरणादायी व्यक्ति थीं क्योंकि वे स्वयं के उदाहरण से सिखाती थीं। वे जो कहती थीं, खुद भी उसका पालन करती थीं। स्कूल मेले के बाद, किसी और से कहने के बजाय वे खुद कचरे की सफाई करना शुरू कर देतीं। वे अपने हाथ मैले करने से घबराती नहीं थीं। इससे बच्चों के भीतर यह समझ पैदा करने में मदद मिलती थी कि कोई भी काम, यहाँ तक कि शौचालय को साफ करना भी, इतना गन्दा या 'निम्न' कोटि का नहीं होता कि आप उसे कर न सकें। मैं बेझिझक उनके पास जाकर कोई भी सवाल कर सकती थी, या स्कूल में चल रही किसी बात को लेकर अपनी चिन्ता व्यक्त कर सकती थी।

> *"जहाँ तक सम्भव हो प्राचार्य को शिक्षकों और विद्यार्थियों का दोस्त तथा विश्वसनीय साथी होना चाहिए, पर इसमें अपनी जिम्मेदारियों के साथ सन्तुलन बनाकर चलना भी जरूरी है। उसके लिए स्वेच्छाचारी हुए बिना व्यवस्था को चलाते रह पाना सम्भव होना चाहिए।"*

जहाँ तक सम्भव हो प्राचार्य को शिक्षकों और विद्यार्थियों का दोस्त तथा विश्वसनीय साथी होना चाहिए, पर इसमें अपनी जिम्मेदारियों के साथ सन्तुलन बनाकर चलना भी जरूरी है। उसके लिए स्वेच्छाचारी हुए बिना व्यवस्था को चलाते रह पाना सम्भव होना चाहिए। चीजों को व्यवस्थित रखने के लिए प्राचार्य को स्कूल की दिन–प्रतिदिन की गतिविधियों में तथा विद्यार्थी–शिक्षक और शिक्षक–विद्यार्थी की पारस्परिक गतिशीलता में गहराई से शामिल होना चाहिए। ऐसा करने से उसमें सम्भावित समस्याओं के सन्दर्भ की समझ पैदा हो सकेगी। मुझे लगता है कि यह भी बहुत जरूरी है कि प्राचार्य कम से कम एक कक्षा अवश्य पढ़ाए।

शिक्षण का अनुभव उसे दूसरे शिक्षकों के सामने आने वाली सम्भावित समस्याओं को समझने में मदद देगा। स्कूल की मेरी कुछ सबसे यादगार स्मृतियाँ जीवविज्ञान, रसायन शास्त्र, भौतिकी और गणित की अभिनव कक्षाओं की हैं। ये सभी प्राचार्य द्वारा ली गई थीं और ये केवल कुछ ही उदाहरण हैं।

प्रत्येक शिक्षक का अपना अलग व्यक्तित्व और शिक्षण शैली थी, और जब मैं छोटी थी मेरे स्कूल की प्राचार्य के बारे में मेरी समझ इस रूप में थी कि वह एक ऐसी शिक्षक हैं जो कार्यालय में भी थोड़ा काम कर लेती हैं। उस स्कूल में बिताए अपने आठ या नौ सालों में उन्होंने मुझे कई प्रकार से प्रेरित किया। उनके माध्यम से ही मैंने चिड़ियों को देखने, प्रकृति में घूमने और पेड़ों पर चढ़ने के आनन्द को पाया। उनमें खुश रहने की, मजाक करने की कमाल की कला थी। हालाँकि कभी–कभी वे डाँटती भी थीं। मेरे विचार में वे वाकई उतनी कठोर थीं नहीं जितना कि वे हमें महसूस करवाती थीं।

किसी भी स्कूल के विद्यार्थी, शिक्षक और प्राचार्य के बीच आपसी सम्मान की भावना होनी चाहिए। उनका अपेक्षाकृत समान दर्जा होना चाहिए। छोटी कक्षाओं में यह ज्यादा सम्भव होगा। समानता, या कम से कम उसका कुछ भान, होना बहुत जरूरी है। यदि लोगों

को यह महसूस होता है कि जो कुछ भी उन्हें प्रभावित करता है, उसमें उनका कुछ दखल है, तो सम्भवतः किसी भी नए बदलाव को लेकर उनकी घबराहट कम हो जाएगी। यह 'ताकत' वास्तविक और ठोस होनी चाहिए। यदि कोई विद्यार्थी या शिक्षक, स्कूल की किसी बात से सन्तुष्ट नहीं है तो उसके पास संस्था के प्रमुख के समक्ष अपनी चिन्ता खुलकर व्यक्त करने की आजादी होनी चाहिए और समस्या के प्रति 'वाकई' कुछ कर सकने की छूट भी।

किसी भी स्कूल में एक खास हद तक जवाबदेही और पारदर्शिता का होना जरूरी है। इसकी शुरुआत प्राचार्य से होनी चाहिए। स्कूल और अधिक लोकतान्त्रिक हो सकते हैं – इससे न केवल विद्यार्थी लोकतान्त्रिक प्रक्रिया और उसके महत्व से अवगत हो पाएँगे, बल्कि अबाध गति से आगे बढ़ाने में भी मदद मिलेगी। लम्बे दौर में यह सम्भवतः सभी के लिए अच्छा साबित होगा। विद्यार्थी–समूह और शिक्षक मिलकर नियमों पर चर्चा कर सकते हैं और निर्णय ले सकते हैं। विद्यार्थी इस प्रक्रिया के अभ्यस्त हो जाएँ और उनमें आवश्यक परिपक्वता हो, तो वे नियमों के महत्व को समझेंगे और बहुत सम्भव है कि उन्हें बहुत से नियम–कायदों की जरूरत ही न पड़े! लेकिन मौजूदा सीमाओं को स्पष्ट किया जाना बहुत जरूरी है। लोकतान्त्रिक व्यवस्था के माध्यम से शिक्षकों, विद्यार्थियों और स्कूल से सम्बद्ध बाकी लोगों के बीच अक्सर पनप जाने वाले तनाव को घटाया जा सकता है। इसकी अपनी समस्याएँ होती हैं, पर यदि स्कूल के सदस्य निष्पक्ष और पूर्वाग्रह रहित रहें तो लोकतान्त्रिक व्यवस्था किसी भी संस्था के लिए चमत्कारी साबित हो सकती है। हमें संस्था के अन्दर भ्रष्टाचार को पनपने से रोकना होगा। जैसा कि मैंने पहले कहा है, संस्था के कामकाज में कुछ हद तक पारदर्शिता का होना बहुत जरूरी है। तुच्छ व्यक्तिगत स्वार्थों को स्कूल की प्रगति के रास्ते में नहीं आने देना चाहिए। स्पष्टवादिता, परिपक्वता और ईमानदारी अनिवार्य हैं।

अन्त में, प्राचार्य और वित्तीय प्रशासन को निष्ठावान होना चाहिए। उन्हें विद्यार्थी, स्कूल और समाज की भलाई को अपने आर्थिक लाभ से ऊपर रखना चाहिए। प्राचार्य को उन लोगों को दाखिला लेने के लिए प्रेरित करना चाहिए जो स्कूल की सोच से इत्तेफाक रखते हों। उसे किसी को भी अनुचित रूप से फायदा पहुँचाने से बचना चाहिए। लाभ के लिए स्कूल चलाने का विचार गलत मालूम पड़ता है। स्कूल और उसके प्राचार्य का प्रमुख उद्देश्य होना चाहिए कि वे अपने विद्यार्थियों को सर्वश्रेष्ठ सम्भव शिक्षा प्रदान करें। बच्चों और शिक्षकों की प्रगति प्राचार्य की सबसे प्रमुख चिन्ता होनी चाहिए। सबसे अधिक ध्यान इसी बात पर होना चाहिए कि विद्यार्थियों के लिए सबसे अच्छा क्या होगा।

निष्कर्ष यह, कि प्रत्येक स्कूल का प्राचार्य विभिन्न आदर्शों और व्यक्ति विशेष का साकार रूप होता है। उसे स्कूल के कामकाज में तो शामिल रहना ही चाहिए, स्कूली समुदाय के पारस्परिक सम्बन्धों की गतिशीलता के साथ भी निकटता से जुड़े रहना चाहिए। किसी स्कूल–प्रमुख को उस स्कूली समुदाय का सच्चा सदस्य होना चाहिए तथा बाकी सभी सदस्यों को बराबर सम्मान देना चाहिए। अलग–अलग स्कूलों की जरूरतें बिलकुल भिन्न हो सकती हैं और आमतौर पर वे निरन्तर बदलती रहती हैं। यह छोटा–सा तथ्य ही परिपूर्ण या आदर्श प्राचार्य को परिभाषित करने के कार्य को वाकई में पेचीदा और मुश्किल बना देता है।

जयन्ती जोसेफ माल्या अदिति इण्टरनेशनल स्कूल में ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ती हैं। वे चौथी से दसवीं कक्षा तक पूर्णा लर्निंग सैन्टर में पढ़ी हैं। पूर्णा में ही जीवविज्ञान की कक्षाओं में शिक्षक की सहायता करते वक्त उन्हें शिक्षण के लिए अपने लगाव का आभास हुआ। संगीत के प्रति गहरा जुनून रखने वाली जयन्ती वायलिन और पिआनो बजाती हैं। वे बंगलौर स्कूल ऑफ म्यूजिक (बी.एस.एम.) के जूनियर और चेम्बर ऑर्केस्ट्रा की सदस्य हैं। गोवा तथा चेन्नई सहित कई अन्य जगहों पर आयोजित संगीत के कार्यक्रमों में उन्होंने बी.एस.एम. चेम्बर ऑर्केस्ट्रा के साथ भाग लिया है। वे संगीत, जैविक शोध और शिक्षा के क्षेत्रों में केरियर बनाना चाहती हैं। उनसे jj.iris.oregon@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है।